SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-03| March- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.29

समसामयिक परिवार में महिलाओं की स्थितिः
(श्रावस्ती जनपद के इकौना विकासखण्ड के विशेष सन्दर्भ में।)

डॉ0 वेद प्रकाश द्विवेदी
असि0 प्रो0 समाजशास्त्र श्रावस्ती
Email- vedprakashd1991@gmail.com

सरांश

परिवार एक सार्वभौमिक संस्था होनें के साथ–साथ प्राथमिक पाठशाला है। किसी बच्चे का जन्म परिवार में ही होता है। जन्म के समय बच्चा अबोध होता है, वह परिवार, समाज, संस्कृति, सभ्यता आदि के बारे में कुछ नहीं जानता है। परिवार के सदस्य ही उसे सबसे पहले सिखानें का काम करते हैं, और जब वह थोडा बडा होता है, तो अन्य द्वितीयक समूहों के सम्पर्क में आता है, और बृहद स्तर पर सा0 व्यवस्था के बारे में सीखता है। अब से कुछ समय पूर्व संयुक्त परिवार की व्यवस्था थी घर के सभी लोग हम की भावना से परिपूर्ण होकर जीवन–यापन करते थे, उस समय महिलाओं की स्थिति बहुत ठीक नही थी पुरुष प्रधानता वाले इस समाज में उन्हें पुरुषों के अधीन जीवन–यापन करना पडता था, किन्तु वर्तमान समय में औद्योगीकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण आदि नें सम्पूर्ण भारतीय सा0 व्यवस्था को बदल दिया। इसी क्रम में पारिवारिक संरचना में भी परिवर्तन घटित हुआ रोजी रोटी के तलाश में ग्रामीण जनसंख्या नगरों की ओर पलायन करनें लगी जिससे संयुक्त परिवार टूटकर एकांकी परिवार में परिवर्तित होनें लगा। एकांकी परिवार में महिलाओं की स्थिति में क्रान्तिकारी सुधार हुआ उन्हें सभी क्षेत्रों में बराबरी का दर्जा मिलनें लगा जिससे महिला सशक्तिकरण को बढावा मिला। प्रस्तुत शोध पत्र में यह जाननें का प्रयास किया गया है, कि अध्ययन क्षेत्र में परिवार की क्या स्थिति है, लोग संयुक्त परिवार में जीवन यापन कर रहे हैं या एकांकी परिवार में। परिवार में महिला–पुरुष की स्थिति कैसी है, महिलाएं सशक्त हो रही हैं या अभी भी पुरुषों के अधीन जीवन यापन कर रही है।

मुख्य शब्दः समसामयिक, परिवार, रुपान्तरण, पश्चिमीकरण, महिला सशक्तिकरण।

प्रस्तावनाः–

प्रस्तुत शोध पत्र समसामयिक परिवार में महिलाओं की स्थिति जनपद श्रावस्ती के इकौना विकासखण्ड पर आधारित है। उक्त अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा यह जाननें का प्रयत्न किया गया है, कि जिस तरह से सम्पूर्ण भारत में पश्चिमीकरण के प्रभाव से संयुक्त परिवार टूटकर एकांकी परिवार में बदल गया है, जिसमें महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार हुआ है क्या श्रावस्ती जनपद में भी लोग संयुक्त परिवार को त्यागकर एकांकी परिवार में जीवन यापन करनें लगे

हैं कि यहॉ पर अभी भी संयुक्त परिवार की प्रथा है, महिलाओं की स्थिति कैसी है आदि का अध्ययन कर विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है।

साहित्यावलोकनः– किसी भी शोधकार्य को करनें से पूर्व शोध से सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन कर लेना आवश्यक प्रतीत होता है, क्योंकि ऐसा करनें से शोध में त्रुटि की सम्भावना कम हो जाती है और शोध में मौलिकता आती है।

विलियम गुडे नें अपनें अध्ययन में कहा– ''कृषि समाज में परिवार एक इकाई के रुप में कार्य करता है लेकिन आधुनिक समाज में विस्तृत परिवार दाम्पत्य परिवार में बदलता जा रहा है।''

क्लेटन नें कहाः– ''जब समाज कृषि स्तर में था तब परिवार विस्तृत रुप में था जैसे–जैसे समाज औधौगिक स्तर की ओर बढता गया वैसे–वैसे एकांकी परिवार में बदलता गया।''

रामकृष्ण मुकर्जी नें पश्चिम बंगाल के परिवारों का अध्ययन कर पाया कि ''संयुक्त परिवार एकांकी परिवार में बदल रहे हैं।''

शोध के उद्देश्यः–

1–अध्ययन क्षेत्र में परिवार के स्थिति का पता लगाना।

2–परिवार में लैंगिक स्थिति को जानना।

3–मूल्य, नैतिकता, शिष्टाचार, सदाचार आदि के बारे में जानना।

4–परिवार में सामूहिकता की भावना का अध्ययन करना।

5–महिला सशक्तिकरण के स्तर का पता लगाना।

शोध परिकल्पनाएंः–

प्राक्कल्पना या उपकल्पना शोध का प्रमुख भाग है। किसी भी शोधकार्य को करनें से पूर्व उपकल्पना का निर्माण कर लेना बेहद आवश्यक है। प्रस्तुत शोधकार्य में निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

1–अध्ययन क्षेत्र में अभी भी संयुक्त परिवार की तुलना में एकांकी परिवार की ओर झुकाव कम है।

2–परिवार में महिलाओं की स्थिति पुरुषों के बराबर है।

3–पारिवारिक फैसलों में महिलाओं की भूमिका रहती है।

4–परिवार में लैंगिक भेदभाव समाप्त हो रहा है।

5–परिवार में महिलाएं पुरुषों की अधीनता से मुक्त हो रही हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण को गति मिल रही है।

आंकडा संकलन विधिः–

प्रस्तुत शोधकार्य को पूर्ण करनें हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आंकडे साक्षात्कार अनुसूची से भरे गये हैं तथा द्वितीयक आंकडे श्रावस्ती जनपद के विविध कार्यालयों से प्राप्त किए गये हैं।

अध्ययन का समग्रः–

समसामयिक परिवार में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन करनें के लिए श्रावस्ती जनपद के इकौना विकासखण्ड का चयन शोधकर्त्ता द्वारा किया गया है, जिसमें सम्पूर्ण गॉवों (ग्राम पंचायत) की सं0–**81** है। इकौना विकासखण्ड के समस्त महिला उत्तरदात्रियों से सूचना प्राप्त कर पाना एक दुष्कर कार्य है, इसलिए शोधार्थी ने अध्ययन की सुलभता एवं अनुसंधान की सीमाओं को दृष्टिगत रखते हुए सम्भावित दैव निर्दशन के लाटरी पद्धति के द्वारा ही इकौना विकासखण्ड के चार गॉव– **भगवानपुर बनकट, चक्रभण्डार, राजगढ़ गुलरिहा, नरपतपुर** का चयन किया गया है।

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

समग्र की विशालता को देखते हुए चयनित गॉवो में से उत्तरदात्रियों का चयन प्रत्येक गॉवों परिवार की संख्या का **10** प्रतिशत उदेश्यपूर्ण निदर्शन विधि द्वारा किया गया है। इस प्रकार सम्पूर्ण अध्ययन कुल **158** उत्तरदात्रियों पर आधारित है। इनकी संख्या का निर्धारण श्रावस्ती जनपद के निर्वाचन नामावली को प्रमाणित मानते हुए निम्न सारणी में दर्शाया गया है।

निदर्शन का अभिकल्पः–

क्र0सं	चयनित गॉव का नाम	गॉव की कुल जनसंख्या	गॉव की पुरुष जनसंख्या	गॉव की महिला जनसंख्या	गॉव के कुल परिवार की संख्या	उत्तरदात्रियों की संख्या (निदर्शन)
1	भगवानपुर बनकट	3059	1625	1434	503	50 (50.3)
2	चक्रभण्डार	1176	624	552	182	18 (18.2)
3	राजगढ़ गुलरिहा	3128	1680	1448	438	44 (43.8)
4	नरपतपुर	3716	1947	1769	457	46 (45.7)
		11079	**5876**	**5203**	**1580**	**158**

नोट– कुल **1580** परिवारों में से प्रत्येक गॉव के परिवारों की संख्या का **10** प्रतिशत अर्थात **158** उत्तरदात्रियों का चयन किया गया है।

सारिणी संख्या– 1

परिवार में उत्तरदात्रियो की स्थिति का वर्गीकरण

क्र0सं0	परिवार में उत्तरदात्रियों की स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
1	कम	25	16.00
2	अधिक	08	5.00
3	बराबर	125	79.00
	योग	**158**	**100.00**

विश्लेषण से विदित होता है, कि सर्वाधिक 79 प्रतिशत महिला उत्तदात्रियों ने बताया कि उनकी स्थिति परिवार में पुरुषों के बराबर है, परिवार के लोग उन्हे उचित मान–सम्मान देते हैं। 16 प्रतिशत उत्तरदात्रियॉ अभी भी पुरुष प्रभुत्वता की शिकार हैं, उन्होंने बताया कि हमारे यहाँ सब कुछ पुरुषों की ही चलती है, हम लोग केवल घर तक ही सीमित है जबकि 5 प्रतिशत महिला उत्तरदात्रियॉं ऐसी मिलीं जिनकी स्थिति पुरुषों की तुलना में श्रेष्ठ है, इसका कारण परिवार में वृद्ध महिलाओं के पति की मृत्यु हो जाने के कारण उनका मुखिया होना हो सकता है, बच्चे उनको काफी आदर सम्मान दे रहे हैं। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है, कि महिलाओं की स्थिति में निरन्तर सुधार परिलक्षित हो रहा है, वे दासता पूर्ण जीवन से मुक्ति की ओर तीव्र गति से अग्रसर हो रही हैं

सारिणी संख्या– 2

पारिवारिक फैसलों में उत्तरदात्रियों की भूमिका का वर्गीकरण

क्र0सं0	पारिवारिक फैसलो में भूमिका की स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
1	रहती है	118	75.00
2	नहीं रहती है	25	16.00
3	आंशिक रहती है	15	9.00
	योग	**158**	**100.00**

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

उपरोक्त वर्गीकरण से विदित होता है, कि अध्ययन में सम्मित सर्वाधिक 75 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने बताया कि पारिवारिक फैसलों में उनकी भूमिका रहती है, उनके बातो को तवज्जों दी जाती है, और माना भी जाता है, जबकि 16 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि पारिवारिक फैसलों में मेरी कोई भूमिका नही रहती पुरूष/परिवार कें मुखिया ही अपनी इच्छानुसार सभी निर्णय लेते हैं, जबकि 9 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने बताया कि हम लोगों की भूमिका आंशिक रहती है। कभी–कभी कहना मान लिया जाता है कभी नही भी माना जाता है। अतः कहा जा सकता है, कि वर्तमान समय में अधिकांश महिलाओं की भागीदारी पारिवारिक फैसलों में विद्यमान है।

सारिणी संख्या– 3

लिंग विभेद को मानने के आधार पर वर्गीकरण

क्र0सं0	लैंगिक विभेद के प्रति राय	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हॉ	11	7.00
2	नहीं	130	82.25
3	आंशिक रूप से	17	10.75
	योग	**158**	**100.00**

उपरोक्त सारिणी से स्पष्ट होता है, कि अध्ययन में सम्मित 82.25 प्रतिशत महिलाएं लिंग विभेद को न मानकर लड़का–लड़की को समान रूप से मानती है और समान रूप से खान–पान, शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा, मनोरंजन आदि का प्रबन्ध करती हैं, जबकि 7 प्रतिशत उत्तरदात्रियॉ लड़का लड़की में भेद करती हुई दिखाई दीं उनके बातों से स्पष्टता परिलक्षित हो रहा है, कि वे भेद–भाव करती हैं, जबकि 10.75 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने बताया कि हम लोग थोड़ा बहुत भेद भाव करते हैं, बाकी समानता की दृष्टि से देखते हैं, जैसे लड़को को अकेले बाजार, नातेदारी आदि जाने की इजाजत दे देते हैं, लेकिन लड़कियों को अकेले नहीं भेजते। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है, कि धीरे–धीरे जनजागरण के चलते यहॉ की महिलाएं भी लैंगिक भेद–भाव को छोड़ रही हैं।

सारिणी संख्या– 4

महिलाओं का पुरुष की अधीनता से मुक्ति के सम्बन्ध में राय का वर्गीकरण

क्र0सं0	पुरुष की अधीनता से मुक्त है?	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हॉ	130	82.25
2	नहीं	28	17.75
	योग–	**158**	**100.00**

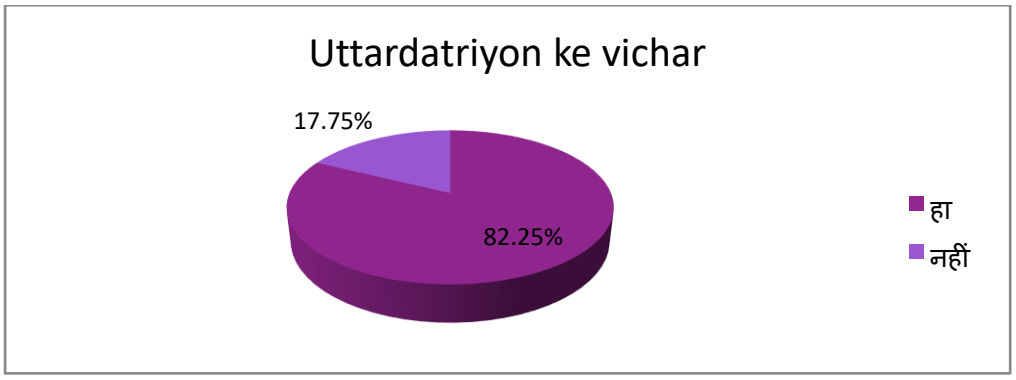

ग्राफ सं0– क

वर्गीकरण से विदित होता है, कि यहाँ की सर्वाधिक महिलाएं जिनकी संख्या 82.25 प्रतिशत है, पति की दासता से मुक्त है और वे स्वतंत्रता पूर्वक जीवन–यापन कर रही हैं, जबकि 17.25 प्रतिशत महिलाएं अभी भी पुरुषों के अधीन जीवन यापन करने को बाध्य हैं, वे अपनी मर्जी से न कही आ जा सकती है और न ही कुछ खा–पी सकती है और न ही अपनी इच्छानुसार कपड़े लत्ते पहन सकती हैं और न ही साज सज्जा ही कर सकती हैं। इस तरह कहा जा सकता है कि अभी भी तमाम महिलाएं बंधन में बंधी हुई हैं।

निष्कर्षः–

वेसक भारत में पारिवारिक में परिवर्तन हुआ है, संयुक्त परिवार के स्थान पर एकांकी परिवार आया है। परिवार में नैतिकता, शिष्टाचार का अपकर्ष देखनें को मिल रहा है, परन्तु अध्ययन क्षेत्र में अभी भी बडे पैमानें पर संयुक्त परिवार की प्रथा विद्यमान है। यहॉ के लोग आधुनिकता का आनन्द उठाते हुए परम्परा को संजोए हुए हैं और एकांकी परिवार की तुलना में संयुक्त परिवार में रहना पसन्द करते हैं। साथ ही आधुनिक सुख सुविधाओं के चलते महिलाओं की स्थिति में क्रान्तिकारी सुधार परिलक्षित हुआ है, जिससे महिला सशक्तिकरण को गति मिला है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1–बर्नाड जे0सी0 ''द फयूचर ऑफ मैरिज'' न्यूयार्क 1972

2–क्लेटन रिचर्ड ''द फैमिली मैरिज एण्ड सोशल चेन्ज'' लैक्सिंगटन 1979

3–गुडे विलियम ''वर्ल्ड रिवोल्यूशन एण्ड फैमिली पैटर्न'' न्यूयार्क 1963

4–कपाडिया के0एम0 ''मैरिज एण्ड फैमिली इन इण्डिया''

5–सैल्टिज एवं जहोदा ''रिसर्च मेंथड्स इन सोशल रिलेशन्स''

6–मुकर्जी रवीन्द्र नाथ ''सा0 शोध एवं सांख्यिकी''

7–कु0 रंजना ''परिवार में स्त्री हत्या एवं रोकथाम'' योजना पत्रिका सितम्बर 2022

8– समाचार पत्र–पत्रिकाएं आदि।

9-Goode and Hatt. (1952) "Methods of Social Research." Mcgraw Hill Book Co, New York, p. 10-20.

10- Ahuja, Ram. (2015) "Social Research." Rawat Publications, Jaipur, p.80-100

11-https//:census2011india.gov.in

12-https//:nicshrawasti.in

Cite this Article:

डा0 वेद प्रकाश द्विवेदी, "समसामयिक परिवार में महिलाओं की स्थितिः (श्रावस्ती जनपद के इकौना विकासखण्ड के विशेष सन्दर्भ में)" *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 03, pp.245-249, March-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ0 वेद प्रकाश द्विवेदी

For publication of research paper title

समसामयिक परिवार में महिलाओं की स्थितिः

(श्रावस्ती जनपद के इकौना विकासखण्ड के विशेष सन्दर्भ में।)

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-03, Month March 2026, Impact Factor-RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.29